शिव और शिवरात्रि

परमात्मा के अवतरण की यादगार को ही हम शिवरात्रि के रूप में प्रति वर्ष मनाते हैं। अतः इस पावन पर्व के शुभ अवसर पर परमात्मा शिव के सम्बन्ध में हमें उन्हीं के द्वारा दिये गये दिव्य ज्ञान–नेत्र के आधार पर, कुछ तथ्य प्रस्तुत है–

शिव के साथ रात्रि शब्द का प्रयोग क्यों किया गया

यह तो सर्व विदित ही है कि परमात्मा शिव के अवतरण की यादगार में शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है। परन्तु इस संदर्भ में पहला प्रश्न यह उठता है कि अगर परमात्मा जन्म–मरण से न्यारा है तो फिर उनका अवतरण कैसे हुआ होगा, जिसकी यादगार में आज तक शिवरात्रि मनाई जाती है? दूसरा सवाल यह है कि जब किसी का भी इस सृष्टि पर जन्म होता है तो उसकी यादगार हमेशा जन्मदिन के रूप में ही मनाने की परम्परा रही है, भले ही वह जन्म रात्रि की वेला में ही हुआ हो। परन्तु शिव के अवतरण की यादगार स्वरूप पर्व में शिव के साथ रात्रि शब्द जोड़ा गया है, ऐसा क्यों?

इस संदर्भ में आध्यात्मिक रहस्य यह है कि निराकार परमात्मा शिव इस सृष्टि में साधारण मनुष्यों के सदृश्य गर्भ से बच्चे के रूप में जन्म नहीं लेते हैं, बल्कि वह एक साधारण वृद्ध मानवी तन में परकाया प्रवेश करके उसके शरीर के द्वारा अपना कर्त्तव्य कराते हैं अर्थात उस समय एक ही शरीर रूपी रथ में दो आत्माएं एक साथ विराजमान रहती हैं। इस तरह परमात्मा उस मानवी शरीर के बंधन में नहीं बंधता है, बल्कि उसे एक निमित्त साधन बनाकर जब चाहता है जितने समय के लिये चाहता तब अपनी इच्छानुसार उस शरीर का आधार लेता है अन्यथा उस शरीर से मुक्त होकर अपने परमधाम अथवा ब्रह्मलोक में स्थित रहता है। परमात्मा का पार्ट उस शरीर में अस्थायी रूप से चलता है तथा उसमें स्थायी रूप से निवास करने वाली अन्य आत्मा

उसमें साधारण मनुष्यों के सदृश्य ही विद्यमान रहते हैं। इस प्रकार निराकार परमात्मा साकार रूप में पार्ट बजाते हुए भी जन्म–मरण के बंधन से सदा मुक्त रहता है। परमात्मा शिव अपने उस साकार माध्यम का नाम ही प्रजापिता ब्रह्मा रखते हैं, जिसका सृष्टि के रचियता के रूप में शास्त्र वर्णन करते हैं।

सृष्टि चक्र के क्रम के अनुसार परमपिता शिव का यह दिव्य अवतरण कलियुग और सतयुग के मध्यकाल में स्थित पुरुषोत्तम संगम की बेला में होता है। जिस समय परमपिता इस सृष्टि में अवरित होते हैं, उस समय सम्पूर्ण सृष्टि पर अध्यात्मिक दृष्टि से अज्ञान का घोर अंधेरा छाया रहता है। इसके प्रतीक रूप में ही रात्रि शब्द का प्रयोग किया गया है। चूँकि ऐसे समय सभी आत्माएं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी पाँच महाभूतों के अधीन रहती हैं, अतः भूतनाथ परमात्मा शिव आकर हमें इससे मुक्त कर सृष्टि में सुख, शांति तथा पवित्रता की स्थापना करते हैं। इस प्रकार एक नये दिन का शुभागमन होता है जिसे ब्रह्मा का दिन अथवा सतयुग कहते हैं। वर्तमान समय वही कल्याणकारी पुरूषोत्तम संगम युग की अमृत बेला है जिसमें स्वयं परमात्मा शिव, प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा नई दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं। सन् 1937 में परमात्मा शिव का प्रथम अवतरण प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम में हुआ था। इस प्रकार हम 67 वीं त्रिमूख्रत शिव–जयनति इस वर्ष यादगार के रूप में नहीं बल्कि साक्षात् साकार रूप में मना रहे हैं।

रात्रि–जागरण का महत्व

प्रायः शिवरात्रि के दिन रात्रि जागरण की परम्परा प्रचलित है। इसका आध्यात्मिक भाव यह है कि जब परमात्मा शिव इस सृष्टि पर आते हैं और हमें आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, तब हमें निरन्तर अपने आत्मिक भाव को जागृत रखने का पुरुषार्थ करना आवश्यक है। तभी हम उनके द्वारा सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न बन सकेंगे।

शिवरात्रि : एकता का संदेश

आज हम यह नारा तो लगाते हैं कि ''हिन्दू– मुस्लिम– सिक्ख– ईसाई, आपस में हैं भाई–भाई'' परन्तु व्यवहारिक जीवन में इस नारे के अनुरूप भावना को विकास नहीं कर पाते हैं। यह भ्रातृत्व की भावना तभी जाग्रत हो सकती है जब हम सभी धर्म की आत्माएं एक को ही अपना पिता निश्चय करें। तो दैहिक जन्म के आधार पर और न ही धाख्मक दृष्टि से सभी मनुष्य मात्र चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, समुदाय, देश अथवा कुल से सम्बन्ध रखने वाले हों उनके अन्दर ज्योख्तबिन्दु स्वरूप आत्मा विराजमान है उसका सम्बन्ध तो एक परमपिता परमात्मा शिव से ही है।

अतः अगर हम स्वयं को ज्योख्तबिन्दु स्वरूप आत्मा निश्चिय कर परमात्मा शिव को अपना पिता मान लें तो सहज ही भाई– भाई की भावना का विकास हो सकता है। विश्व बन्धुत्व की यह भावना ही वसुधैव कुटुम्बकम् का आधार बन सकती है। इस भावना को जाग्रत करके ही हम एकता और अखन्डता के सपने को साकार कर विश्व में शांति ला सकते हैं।

अतः आईए आज हम भाई– भाई की इस आत्मिक भावना को जाग्रत कर सच्चे अर्थों में शिवरात्रि मनायें। अतः शारांश रूप में शिवरात्रि का पर्व हमें यही संदेश देता है कि– हम एक हैं और एक के हैं।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचस

www.bkvarta.com

www.bkvarta.com (Brahamkumaris First Hindi Web Portal)